बेल मोहोरी इजार की, जानों एही भूखन सुन्दर।
अतंत सोभा सबसे, एही है खूबतर।। २ ।।

इजार की मोहरी पर बेल बनी हैं जैसे सुन्दर आभूषण पहने हैं। यह शोभा सबसे अधिक लगती है।

इजार बंध नंग कई रंग, कई बूटी कई नकस।
निरमान न होए इन जुबां, ए वस्तर अजीम अर्स।। ३ ।।

इजारबंध में कई रंगों के नग हैं और कई बूटियां और कई नक्शकारी हैं। यह बनाए नहीं जाते। यह अखण्ड परमधाम के वस्त्र हैं। इनका यहां की जबान से कैसे वर्णन हो?

अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम।
अर्स चीज न आवे सब्दमें, ए नेक केहेत हुकम।। ४ ।।

परमधाम के नगों में अत्यन्त शोभा है तथा पश्म के समान नरमाई है, इसलिए परमधाम की चीजें शब्दातीत हैं। यह थोड़ा सा वर्णन मैंने श्री राजजी के हुकम से किया है।

बेल पात फूल कई विधके, कई विध कांगरी इत।
जोत न नरमाई सुमार, जुबां क्या कहे सिफत।। ५ ।।

बेल, पात, फूल, कई तरह की कांगरी की ज्योति तथा कोमलता बेशुमार हैं। यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

नेफा रंग कसूंबका, अति खूबी अतलस।
बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस।। ६ ।।

नेफे का रंग लाल है जो अतलस (सनील) की बनी है। जिसमें बेलें बनी हैं और मोतियों के कंगूरे हैं। लगता है यह आभूषणों से अच्छे हैं।

ताना बाना रंग रेसम, जवेर का सब सोए।
बेल फूल बूटी तो कहूं, जो मिलाए समारे होए।। ७ ।।

ताना, बाना तथा रंग सब रेशमी हैं और जवेरों के हैं। जिनमें बनी बेल, फूल, बूटियों का वर्णन तब करें यदि किसी ने बनाए और संवारे हों।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ५५५ ॥

खुले अंग सिनगार छबि छाती

रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तोको हकें कही अर्स की।
अर्स किया तेरे दिलको, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी रूह! तुझे श्री राजजी महाराज ने परमधाम की कहा है, इसलिए तेरे दिल को अर्श बनाया है। श्री राजजी महाराज ने तुझे बड़ाई दी है, तो तुझे इस सुख की लज्जत क्यों नहीं आती?

जो कदी तैं आई नहीं, तोमें हक का है हुकम।
हुज्जत दई तोको अर्सकी, दिया बेसक अपना इलम।। २ ।।

यदि मानो तू परमधाम से खेल में नहीं आई है, फिर भी तेरे अन्दर श्री राजजी का हुकम है और परमधाम के होने की शोभा दी है। अपनी जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी दी है।

Nijanand App

बिन जामें देखों अंगको, आसिक सब सुख चाहे।
बागा पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए।। ३ ।।

हे मेरी रूह! तू श्री राजजी महाराज से सब सुख चाहती है, इसलिए अब बिना जामा पहने उनके अंगों को देखो। बागा पहने तो हमेशा दर्शन करते हैं, परन्तु यह छबि कुछ विशेष तरह की है।

आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक।
निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा विसेक।। ४ ।।

आशिक रूह हमेशा माशूक के नए-नए सुखों की चाहना करती है और उनको नए-नए सिनगार में देखती है, जो एक से दूसरे विशेष अच्छे लगते हैं।

जुदे जुदे सुख ले हक के, रूह आसिक क्योंए न अघाए।
ताथें जुदा जुदा बरनन, सुख आसिक ले दिल चाहे।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के जुदा-जुदा सिनगार के सुख लेकर आशिक रूह को किसी प्रकार से तृप्ति नहीं आती, इसलिए श्री राजजी के नए-नए सिनगारों का वर्णन करके अपने मनचाहे सुख लें।

खाना पीना खिन खिन लिया, प्यार अर्स रूहन।
पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन।। ६ ।।

पल-पल प्यार लेना ही अर्श की रूहों का खाना-पीना है। आशिकों का आहार सदा माशूक को देखना ही होता है।

हक बैठे अपने अर्स में, सो अर्स मोमिनका दिल।
तो अनेक खूबी खुसालियां, हम क्यों न लेवें मिल।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज अपने घर (अर्श) में बैठे हैं और वह घर मोमिनों का दिल है। जहां पर हर प्रकार की खुशियां और सुख हैं, तो हम सब मिलकर उस आनन्द को क्यों न लें?

ए जो हक वस्तरकी खूबियां, सो हक अंग परदा जहूर।
बारीक ए सुख जानें रूहें, जिनपे अर्स सहूर।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्रों की खूबी का जो वर्णन किया है वह श्री राजजी के अंग की ही शोभा है। परमधाम की इन खास (बारीक) बातों को अर्श की रूहें ही जानती हैं, जिनके पास तारतम वाणी है।

वस्तर भूखन सब पूरन, सुख बिन जामें और जिनस।
देख देख देखे जो आसिक, जो देखे सोई सरस।। ९ ।।

वस्त्र, आभूषण अपने आप सब तरह से पूर्ण हैं। जो परमधाम के आशिक हैं, जिसे देखते हैं उनको वही अच्छा लगता है, परन्तु बिना जामा पहने दर्शनों का सुख कुछ और ही है।

कटि कोमल अति पतली, सुन्दर छाती गौर।
देख देख सुख पाइए, जो होवे अर्स सहूर।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की कमर पतली और कोमल है। छाती गोरे रंग की है, जिसे देखकर अति सुख होता है। यदि जागृत बुद्धि से देखें तो और ही स्वाद आता है।

Nijanand App

कटि कोमल कही जो पतली, कछु ए सलूकी और।
ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूं देखी होए और ठौर।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर को कोमल और पतली कहा है। यह तो उपमा दी है। वास्तव में शोभा एक निराली ही है, जो कहीं और किसी ठिकाने देखने से नहीं मिल सकती, इसलिए यह झूठी जबान कैसे वर्णन करे?

और पेट पांसली हककी, ए कौन भांत कहूं रंग।
रूह देखे सहूर अर्स के, और कौन केहेवे हक अंग।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के पेट की पसलियां किस तरह की और किस रंग की हैं, कैसे कहूं? यदि रूह जागृत बुद्धि से देखे तो वही अनुभव कर सकती है। दूसरा और कौन श्री राजजी महाराज के अंग का वर्णन कर सकता है?

पांसे पांखड़ी बगलें, सोभित बंधो बंध।
अंग रंग खूबी खुसालियां, पार ना सुख सनंध।। १३ ।।

पांसे की पसलियां फूल की पंखुड़ी के समान गुंथी हैं, शोभा युक्त हैं। श्री राजजी महाराज के अंग के रंग की खूबियों का बेशुमार सुख है।

ज्यों बरनन सुपन सरूपकी, ए भी होत विध इन।
ए चारों चीज उत हैं नहीं, ना अर्समें ख्वाब चेतन।। १४ ।।

जैसे संसार के स्वरूप का वर्णन किया जाता है, वैसे ही मैंने परमधाम का वर्णन किया है, परन्तु परमधाम में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु यह चारों तत्व नहीं हैं और न वहां मिटने वाली कोई जड़ वस्तु ही है। वहां हर चीज चेतन है।

ए बरनन अर्स अंग होत है, ले मसाला इतका।
ताथें किन बिध रूह कहे, ना जुबां पोहोंचे सब्द बका।। १५ ।।

यह वर्णन परमधाम के अंग का है। वर्णन करती हूं, परन्तु उपमा यहां की दे रही हूं, इसलिए यहां की जबान उस शब्दातीत की शोभा को कैसे कहे?

जो अरवा होए अर्सकी, सो कीजो इलम सहूर।
इलम सहूर जो हकें दिया, लीजो इनसे रूहें जहूर।। १६ ।।

जो परमधाम की रूहें हों, वह जागृत बुद्धि से विचार कर लेना। श्री राजजी महाराज के जागृत बुद्धि के ज्ञान से सारी शोभा को देख लेना।

हकको जेता रूह देखहीं, सुध तेती ना बुध मन।
तो सुपन जुबां क्या केहेसी, अंग हक बका बरनन।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को रूह जितना देखती है, उतनी सुध मन और बुद्धि में नहीं आती तो श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूरी अंग का वर्णन सपने की जबान कैसे करेगी?

नरम नाजुक पेट पांसली, क्यों कहूं खूब रस रंग।
देत आराम आठों जाम, हक बका अर्स अंग।। १८ ।।

पेट की पसलियां नर्म हैं, नाजुक हैं। उनकी खूबी, रंग कैसे बताएं? श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूरी अंग रूहों को रात-दिन बेशुमार सुख देते हैं।

Nijanand App

छाती निरखों हककी, गौर अति उज्जल।
देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमिन कह्या अर्स दिल।। १९ ।।

श्री राजजी की छाती बहुत गोरी और उज्ज्वल है। ऐसे उनके हृदय की खूबी खुशाली को मोमिन देखते हैं, तभी मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

जिन देख्या हक हैड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और।
वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर।। २० ।।

जिन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के हृदय को देखा है, वह अपनी नजर दूसरी तरफ नहीं कर सकते। उन्हें श्री राजजी महाराज की छवि के बिना सब संसार आग के समान लगता है।

जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल न छोड़े तिन।
जाके अर्स की एक रंचक, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन।। २१ ।।

जिन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के अंग को देखा हो श्री राजजी महाराज की सुन्दरता के सागर को नहीं छोड़ते। वरना जिसके परमधाम की एक कंकरी त्रैगुन सहित चौदह लोक को उड़ा देती है।

वह देख्या अंग क्यों छूटहीं, हक परीछा एही मोमिन।
ए होए अर्स अरवाहों सों, जिनके अर्स अजीम में तन।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज को देखने पर उनकी नजर वहां से न हटे, यही मोमिनों की परीक्षा है। जिन मोमिनों की परआतम परमधाम में है, वही श्री राजजी को एकटक देखते रहते हैं।

हक जात अर्स उन तनसे, बीच रेहेत मोमिनके दिल।
अर्स मोमिन दिल तो कह्या, यों हिल मिल रहे असल।। २३ ।।

हकजात रूहें परमधाम में श्री राजजी के तन से हैं और श्री राजजी महाराज खेल में मोमिनों के दिल में रहते हैं। मोमिनों के दिल को इसलिए अर्श कहा है कि श्री राजजी और मोमिन एकाकार हैं।

दिल हक का और हादी का, ए दोऊ दिल हैं एक।
एकै मता दोऊ दिलमें, ए अर्स रूहें जानें विवेक।। २४ ।।

श्री राजजी का दिल और श्यामाजी महारानी का दिल एक है। दोनों की विचारधारा एक है। इस बात को परमधाम की रूहें जानती हैं।

जो गंज हक के दिलमें, सो पूरन इस्क सागर।
कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमिन कोई न कादर।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में गंजान गंज सागर के समान इश्क भरा है, जिसे मोमिनों के अतिरिक्त लेने की शक्ति और किसी में नहीं है।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो इन दिलमें हक बैठक।
तो इत जुदागी कहां रही, जहां हकै आए मुतलक।। २६ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है कि उसमें श्री राजजी महाराज की बैठक है। जहां श्री राजजी महाराज दिल में आ गए तो जुदाई कहां रही?

Nijanand App

ए क्यों होए बिना निसबतें, इतहीं हुई वाहेदत।
निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत।। २७ ।।

बिना सम्बन्ध के (अंगना से) ऐसा एकाकार होना कैसे सम्भव हो सकता है? श्री राजजी महाराज और रूहें जब एक ही हैं तो उनको खिलवत से अलग कैसे कहा जाए?

इतहीं हक मेहेरबानगी, इतहीं हुकम इलम।
तो इत जोस इस्क क्यों न आवहीं, जो हकें दिल में धरे कदम।। २८ ।।

जहां श्री राजजी महाराज बैठे हैं वही उनका हुकम, मेहर और इलम है। तो फिर जोश और इश्क क्यों नहीं आएगा?

सोई सहूर अर्सका, जो कह्या हक इलम।
सोई मोमिन पे बेसकी, यों अर्स रूहें जुदे ना खसम।। २९ ।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि का ज्ञान ही इलम है। इसी से मोमिनों के संशय मिटे। इस तरह से परमधाम के मोमिन श्री राजजी से अलग नहीं हैं।

जुबां क्या कहे बड़ाई हक की, पर रूहें भूल गई लाड़ लज्जत।
एक दम न जुदे रहे सकें, जो याद आवे हक निसबत।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की साहेबी यहां की जबान से कैसे वर्णन हो? पर अर्श की रूहें खेल में आकर धनी की लाड़ लज्जत को भूल गई हैं, वरना अपनी निसबत याद आने पर कि मैं धनी की अंगना हूं, एक पल के लिए भी अलग नहीं रह सकतीं।

हक हैड़े के अन्दर, मता अनेक अलेखे।
उपली नजरों न आवहीं, जो लों रूह अंदर ना देखे।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में बेशुमार न्यामतें हैं। रूहें जब तक जागृत बुद्धि के ज्ञान से अन्दर की नजर आतम दृष्टि से न देखें, तब तक ऊपर की नजर से दिखाई नहीं देतीं।

क्यों छूटे हक हैयड़ा, मोमिन के दिलसें।
अर्स मता जो मोमिन का, सब हक हैड़े में।। ३२ ।।

मोमिनों के दिल से श्री राजजी महाराज का हृदय कैसे छूट सकता है, क्योंकि मोमिनों की परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी के हृदय में ही हैं।

सब अंग देखत रस भरे, प्रेम के सुख पूरन।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ले हिरदे रस मोमिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग प्रेम के रस से भरपूर सुख देने वाले हैं। जिन मोमिनों के दिल में इसका रस आएगा, वही इसको देखेंगे और समझेंगे।

ए जो बातून गुन हक दिलमें, सो क्यों आवे मिने हिसाब।
ए दृष्ट मन जुबां क्या कहे, ए जो मसाला ख्वाब।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो गुणों के रहस्य छिपे पड़े हैं, वह बेशुमार हैं। फिर यहां के मन और जबान से यहां की उपमा लेकर वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान।
जो नेक देखूं गुन अन्दर, तो तबहीं निकसे प्रान।। ३५ ।।

मेरे धनी की छाती, जिनको सुभान कहते हैं, यदि जरा सा भी उनके गुणों को विचार करें तो उसी वक्त यह शरीर छूट जाए।

जो निध हक हैड़े मिने, सो कई अलेखे अनेक।
सो सुख लेसी अर्समें, जिन बेवरा लिया इत देख।। ३६ ।।

श्री राजजी के दिल में बेशुमार न्यामतें हैं। मोमिन इन सुखों, जिसका वर्णन यहां समझ लिया है, उनकी लज्जत परमधाम में लेंगे।

हक हैड़े में जो हेत है, रूहों सों प्रेम प्रीत।
जिन मेहेर होसी निसबत, सोई ल्यावसी परतीत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो रूहों से प्रेम, प्रीति है। जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर होगी, वही इसे पहचानेगी।

हक हैड़े में इस्क, सब अंगों सनेह।
रूह देखसी हक मेहेर से, निसबती होसी जेह।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में इश्क और सब अंगों में प्रेम, स्नेह भरा है। अब जो उनकी अंगना हैं, वही उनकी मेहर से देखेंगी।

हक हैड़े में एही बसे, मैं लाड़ पालों रूहों के।
ए हक हुज्जत आवे तिनों, तन असल अर्स में जे।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में रूहों से लाड़ लड़ाने की ही एक चाहना रहती है। इसका अधिकार उन्हीं को है, जिनकी परआतम परमधाम में है।

हक हैड़े में निस दिन, सुख देऊं रूहों अपार।
जिन रूह लगी होए अन्दर, सो जानेगी जाननहार।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में रूहों को सुख देने की ही बात रहती है। जिन रूहों को इस बात की तड़प होती है, वही इसके स्वाद को जानती हैं।

एक नुकता इलम हक दिल से, आया मेरे दिल माहें।
इन नूर नुकते की सिफत, केहे न सके कोई क्यांहें।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के इलम सागर से एक बिन्दु मेरे दिल में आया। इस तारतम ज्ञान, जो बिन्दु के समान है, की सिफत कोई नहीं कह सकता।

ले नूर नुकते की रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन।
इनमें कहूं न पाइया, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।। ४२ ।।

मैंने इस जागृत बुद्धि के तेज से चौदह लोक खोजे पर ऐसा इलम मुझे त्रिलोक त्रैगुन समेत कहीं पर नहीं मिला।

Nijanand App

इन इलम नुकते की रोसनी, नहीं कोट ब्रह्मांडों कित।
सो दिया मोहे सुपने दिलमें, जो नहीं नूर अछर जाग्रत।।४३।।

इस जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान की रोशनी करोड़ों ब्रह्माण्डों में कहीं भी नहीं है और जो ज्ञान अक्षर ब्रह्म को जागृत अवस्था में नहीं है वह मुझे श्री राजजी महाराज ने सपने के तन में दिया है।

खाक पानी आग वाएको, ए चौदे तबक हैं जे।
सो मेरे दिल कायम किए, बरकत नुकते इलम के।।४४।।

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तत्वों से ही यह चौदह तबक बने हैं। इन सबको इस जागृत बुद्धि के बिन्दु समान इलम की बरकत से, श्री राजजी महाराज की मेहर ने, सबको मेरे द्वारा अखण्ड करवाया।

एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर।
इन बूंद की सिफत देखियो, ऐसे हक दिलमें कई सागर।।४५।।

श्री राजजी महाराज के दिल से जो ज्ञान की एक बूंद आई, उसने चल-अचल के ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर दिया। जब एक बूंद की ऐसी महिमा है तो श्री राजजी के दिल में तो कई सागर भरे पड़े हैं।

एक बूंद ने बका किए, तो होसी सागरों कैसा बल।
तो काहूं न पाई तरफ किने, कई चौदे तबक गए चल।।४६।।

जब एक ही बूंद ने संसार को अखण्ड कर दिया तो इलम के सागर में कितनी शक्ति होगी, इसलिए आज दिन तक उस जागृत बुद्धि को कोई प्राप्त नहीं कर सका। कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट गए।

ऐसे कई सुख हक हैड़े मिने, सो ए जुबां कहे क्योंकर।
हैड़े बल तो नेक कह्या, जो इत बूंद आई उतर।।४७।।

श्री राजजी महाराज के दिल में ऐसे कई सुख हैं। यहां की जबान से कैसे कहें? हृदय के बल का तो मैंने अंश मात्र कहा है। वह भी उस बूंद के बल से जो यहां आ गया है।

कोट ब्रह्मांड का केहेना क्या, जिमी झूठी पानी आग वाए।
ए चौदे तबक जो मुरदे, नुकते इलमें दिए जिवाए।।४८।।

करोड़ों ब्रह्माण्डों का क्या कहना जो झूठी जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी से बनते-मिटते हैं। इस नुक्ता इलम ने चौदह तबक के मुरदार जीवों को अखण्ड कर दिया।

क्यों कहिए सोभा हककी, ना कछू झूठ में आए हम।
लेहेजे हुकमें झूठे बैराटको, सांचे किए नुकते इलम।।४९।।

हम इस झूठे संसार में आए ही नहीं हैं तो श्री राजजी महाराज की शोभा का वर्णन कैसे करें? इस नुक्ता इलम ने मिटने वाले संसार को श्री राजजी के हुकम से अखण्ड कर दिया।

कही न जाए झूठमें, हक हैड़े की सिफत।
हक सोभा छल में तो होए, जो सांच जरा होए इत।।५०।।

इस झूठे संसार में श्री राजजी के हृदय की महिमा कही नहीं जा सकती। इसका बयान संसार में तभी सम्भव हो सकता है, यदि यहां रंचमात्र भी सत्य हो।

Nijanand App

तो कह्या वेद कतेबमें, ए ब्रह्मांड नहीं रंचक।
तो क्यों कहिए आगे इनके, ए जो सिफत दिल हक।।५१ ।।

इसलिए वेद कतेब में ब्रह्माण्ड को शून्य बताया है। अब इसके आगे श्री राजजी महाराज के दिल की महिमा कैसे कहें?

कहूं सुन्दर सोभा सलूकी, कहूं केते गुन उपले।
ए सुख न आवे हिसाब में, ए जो गिरो देखत है जे।।५२ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती की सलूकी और सुन्दरता के ऊपर के गुण कहां तक कहें? मोमिन जिन सुखों को देखते हैं, वह हिसाब में नहीं आ सकते हैं।

हक छाती सलूकी सुनके, रूह छाती न लगे घाए।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, हाए हाए ओ नहीं अर्स अरवाए।।५३ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती की सलूकी सुनकर रूह की छाती में घाव नहीं लगते। धिक्कार है उनकी अक्ल को, वह परमधाम की रूहें कहलाने लायक नहीं हैं।

हक छाती नरम कोमल, रूह सदा रहे सूर धीर।
पाए बिछुरे पिउ परदेस में, हाए हाए सो रही ना कछू तासीर।।५४ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती बहुत नाजुक और कोमल है। रूहें इसे सदा बड़ी चौकसी से अपने दिल में धारण करती हैं। अब परदेश में आकर उनसे श्री राजजी महाराज के चरण कमल छूट गए हैं। हाय! हाय! मोमिनों में परमधाम का बल ही समाप्त हो गया है।

छाती मेरे खसम की, देखी जोर सलूक।
न्यारे होत निमखमें, हाए हाए जीवरा न होत टूक टूक।।५५ ।।

मैंने धनी की छाती को नजर भरकर देखा। अब उससे एक पल के लिए भी अलग होने से हाय! हाय! यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होता?

छाती मेरे मासूक की, चुभी मेरी छाती माहें।
जो रूह अर्स अजीम की, तिनसे छूटत नाहें।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती मेरी छाती में चुभ रही है। तो जो रूह परमधाम की है, उससे यह श्री राजजी की छाती किसी तरह से नहीं छूटती।

बिछुरे पाए परदेसमें, देखी पिउ अंग छाती।
अब पलक पड़े जो बिछोहा, हाए हाए उड़े ना करे आप घाती।।५७ ।।

देखो, अपने धनी की बिछुड़ी हुई छाती को परदेश में पाया है। अब एक पल का भी वियोग होता है तो आत्मा को तुरन्त शरीर छोड़ देना चाहिए।

मासूक छाती रूह थें ना छूटहीं, अति मीठी रंग भरी रस।
ए क्यों कर छोड़े मोमिन, जो होए अरवा अर्स।।५८ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती रूह से नहीं छूटती। वह अत्यन्त सुन्दर और मस्ती से भरपूर है। जो परमधाम की रूहें हैं, वह अब इसे क्यों छोड़ें?

Nijanand App

ए अंग मेरे मासूक के, मीठे अति मुतलक।
ए लज्जत असल याद कर, ए लें अरवा आसिक।।५९ ।।

यह मेरे माशूक श्री राजजी महाराज के अंग निःसंदेह अति मीठे हैं। आशिक रूहें अपने मूल स्वरूप को यादकर यह लज्जत लेती हैं।

मुख न फेरें मोमिन, छाती इन सुभान।
ए करते याद अनुभव, क्यों न आवे असल ईमान।।६० ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज की छाती से नजर को नहीं हटाते। जिन मोमिनों को इसका अनुभव है उन्हें यह याद आते ही असल ईमान क्यों नहीं आता?

मासूक छाती निरखते, क्यों याद न आवे अर्स।
विचार किए आवे अनुभव, जाको दिल कह्यो अरस-परस।।६१ ।।

मेरे माशूक श्री राजजी महाराज की छाती को देखकर परमधाम की याद क्यों नहीं आती? हम दिल में विचार करें कि हम और श्री राजजी अरस-परस एक हैं तो विचार करने पर ही परमधाम की याद आती है।

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में मता हक सब।
अजूं हक आड़े पट रहे, ए देख्या बड़ा तअजुब।।६२ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और अर्श में सब खजाना है। फिर भी बड़ी हैरानी है कि मेरे और श्री राजजी के बीच में यह झूठे तन का परदा पड़ा है।

पट एही अपने दिलको, हकें सोई दिल अर्स कह्या।
हक पट अर्स सब दिलमें, अब अंतर कहां रह्या।।६३ ।।

यह परदा अपने दिल के ऊपर है। इसी दिल को ही श्री राजजी ने अपना अर्श कहा है। अब श्री राजजी महाराज, परमधाम और सब न्यामत मेरे दिल में है तो अन्तर कहां रह गया?

जो विचार विचार विचारिए, तो हक छाती न दिल अंतर।
ए पट आड़ा क्यों रहे, जब हुकमें बांधी कमर।।६४ ।।

यदि जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से विचार करके देखें तो श्री राजजी की छाती और मोमिनों के दिल में कुछ अन्तर नहीं है। जब श्री राजजी महाराज के हुकम से उनसे एकाकार होने के लिए कमर कस ली है तो इस तन का परदा कैसे रहेगा?

ए क्यों रहे पट अर्समें, पूछ देखो हक इलम।
ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम।।६५ ।।

श्री राजजी की वाणी से समझकर देखो तो परमधाम में फरामोशी का परदा कैसे रहेगा? जब रूहें श्री राजजी के हुकम से चरणों में आ गईं तो बीच में आए माया के पिण्ड और ब्रह्माण्ड का परदा मिट जाएगा।

एही पट फरामोस का, दिलमें रही अंतर।
जब हुकमें बंधाई हिम्मत, तब होस में न आवे क्योंकर।।६६ ।।

यह फरामोशी का परदा ही मोमिनों के दिल में श्री राजजी से अन्तर डाल रहा है। जब हुकम ने हिम्मत देकर खड़ा किया तो फिर फरामोशी उड़ाकर जागृत क्यों नहीं होते?

Nijanand App

दिल अर्स कह्या याही वास्ते, परदा कह्या जहूर।
दोऊ दिलके बीचमें, जो दिल देखे कर सहूर।। ६७ ।।

मोमिनों के दिल को इस वास्ते अर्श कहा है। यदि यह दिल में विचार करके देखें तो श्री राजजी और मोमिनों के दिलों में यही फरामोशी का परदा है।

हक छाती निपट नजीक है, सेहेरग से नजीक कही।
हक सहूर किए बिना, आड़ी अंतर तो रही।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप मोमिनों को सेहेरग से नजदीक बताया है, इसलिए जागृत बुद्धि का ज्ञान जब तक नहीं आया तभी तक यह फरामोशी का परदा आड़े है।

हक भी कहे दिलमें, अर्स भी कह्या दिल।
परदा भी कह्या दिलको, आया सहूरें बेवरा निकल।। ६९ ।।

श्री राजजी महाराज दिल में हैं और मोमिनों के दिल को भी अर्श कहा है। दिल के ऊपर परदा भी कहा है। विचार करने से इसका निर्णय हो गया।

जो पीठ दीजे ब्रह्मांड को, हुआ निस दिन हक सहूर।
तब परदा उड़्या फरामोस का, बका अर्स हक हजूर।। ७० ।।

जब संसार को पीठ दें तो रात-दिन श्री राजजी नजर में रहेंगे और उन्हीं की चर्चा होगी। तब फरामोशी का परदा उड़ जाएगा। फिर अखण्ड परमधाम में श्री राजजी के सामने उठ खड़े होंगे।

मेहेबूब छाती की लज्जत, देत नहीं फरामोस।
फरामोस उड़े आवे लज्जत, सो लज्जत हाथ प्रेम जोस।। ७१ ।।

यह फरामोशी ही श्री राजजी महाराज की छाती (दिल) के सुख नहीं लेने देती। जब फरामोशी समाप्त हो जाए तो हक का आनन्द आ जाए। आनन्द आते ही प्रेम और धनी का जोश आ जाएगा।

इस्क जोस और इलम, ए हक हुकम के हाथ।
तब हक हैड़ा ना छूटहीं, ए सब सुख हैड़े साथ।। ७२ ।।

इश्क, जोश और इलम यह तीनों श्री राजजी के हुकम के हाथ में हैं। यह सभी सुख हृदय के अन्दर हैं। अब श्री राजजी महाराज की छाती मोमिनों से नहीं छूटेगी।

ए मेहेर करें जो मासूक, तो रूह हुकमें बांधें कमर।
तब फरामोसी दूर दिलसे, हक हैड़े चुभी नजर।। ७३ ।।

जब श्री राजजी महाराज की मेहर हो तो धनी के हुकम से रूह फरामोशी को हटाने के लिए कमर कसकर खड़ी हो जाए। तब श्री राजजी महाराज के हृदय में रूह की नजर टिक जाएगी।

ए होए हक निसबतें, रूहों हुकम देवे हिंमत।
तब फरामोसी रेहे ना सके, दे हक छाती लाड़ लज्जत।। ७४ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम धनी की अंगनाओं को बल देवें तो यह काम उनकी अंगनाएं ही कर सकती हैं। तब फरामोशी हट जाने से श्री राजजी महाराज की छाती की लाड़ लज्जत मिलने लगेगी।

Nijanand App

इन विध छाती न छूटहीं, रूहों सों निस दिन।
असल सुख हक हैड़े के, ए लज्जत लगे अर्स तन।।७५।।

इस तरह से रूहों से रात-दिन श्री राजजी का हृदय कभी नहीं छूटेगा। श्री राजजी महाराज के हृदय के असली सुखों के आनन्द मोमिनों की परआतम के तन ही ले सकते हैं।

जोस इस्क सुख अर्स के, ए लगें रूह मोमिन।
जब ए सबे मदत हुए, तब क्यों रहे पट रूहन।।७६।।

श्री राजजी महाराज का जोश, इश्क और परमधाम के सभी सुखों को मोमिन लेने लगें तो फिर रूहों के बीच फरामोशी का परदा, यह संसार के तन कैसे रह सकते हैं?

असल नींद सो फरामोसी, फरामोसी सोई अंतर।
जो अर्स लज्जत आवहीं, तो इलमें तबहीं जुड़े नजर।।७७।।

असल में नींद को फरामोशी कहा है। फरामोशी ही परदा है। यदि परमधाम के आनन्द आ जाएं तो श्री राजजी की नजर से रूह की नजर इलम द्वारा मिल जाए।

इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होएं एक ठौर।
तिन खैंच लिया मता अर्स का, पट नहीं कोई और।।७८।।

इलम, सहूर, मेहर, हुकम यह चारों चीजें एक साथ इकट्ठी रहती हैं। यही परमधाम की न्यामतें हैं जो श्री राजजी महाराज ने अपने पास खींच रखी हैं। यही परदा है।

अर्स तन दिलमें ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें।
सुख लज्जत अर्स तन खैंचहीं, तब क्यों रहे अन्तर माहें।।७९।।

हमारी परआतम के दिल में ही इस संसार के तनों का दिल है और दोनों दिलों के बीच कोई परदा नहीं है। जब हमारी परआतम इन चारों के सुख को खींच लेगी तो दोनों के अन्दर परदा हट जाएगा।

सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूं ना निकसत।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ए तो दिल में बड़ा देखत।।८०।।

सपना दिल के अन्दर होता है। आत्मा कहीं निकलकर जाती नहीं है। इसी तरह यह चौदह लोक सपने की तरह कुछ भी नहीं हैं, परन्तु हमने दिल में बड़ा समझ रखा है।

हक छाती रूहथें न छूटहीं, नजर न सके फेर।
जो कोई रूह अर्स की, ताए हक बिना सब अन्धेर।।८१।।

श्री राजजी महाराज की छाती रूह से नहीं छूटती और न रूह अपनी नजर को वहां से हटा ही सकती है। परमधाम की रूहों के लिए श्री राजजी महाराज के बिना सब अंधेरा है।

हक छाती में लाड़ लज्जत, और छाती में असल आराम।
ए सब सुख को रस पूरन, तो रूह लग रही आठों जाम।।८२।।

श्री राजजी महाराज की छाती में ही सब लज्जत और आराम हैं। यह सब रूहों के सुखों से भरपूर है, इसलिए रूहें रात-दिन यहां से सुखों को लेती हैं।

Nijanand App

रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को।
असल सुख सागर भयो, देखें अर्स आराम सबमों।। ८३ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज की छाती (दिल) याद आती है तो रूहों को आनन्द आता है। तब रूह के दिल में सुख ही सुख का अनुभव होता है। तो वह सभी रूहों को अर्श के आराम में देखती हैं।

ए जो हक हैड़े की खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक।
पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक।। ८४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की खूबियों को यहां की बुद्धि कैसे कहेगी? पर यह जो कुछ कहा है श्री राजजी के हुकम और तारतम वाणी से कहा है।

रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लदुन्नी इलम।
ना तो रूह कहे क्यों नींद में, हक हैड़ा बका खसम।। ८५ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी रूह को खड़ा करती है। वरना रूह सपने में रहकर श्री राजजी के अखण्ड दिल की बातों को कैसे बयान कर सकती है?

महामत कहे बोलूं हुकमें, अर्स मसाला ले।
दरगाही रूहन को, सुख असल देने के।। ८६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं जो कुछ कह रही हूं श्री राजजी महाराज के हुकम से परमधाम का मसाला लेकर बोलती हूं, ताकि परमधाम की रूहों को अखण्ड सुख दे सकूं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ६४१ ।।

खभे कण्ठ मुखारविंद सोभा समूह

मंगला चरन

मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल।। १ ।।

मेरे महबूब श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द उज्ज्वल और लालिमा लिए है। इनके स्वरूप के तेज, पुंज, कोमलता एवं शोभा कैसे वर्णन करूं?

बांहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह।
हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू।। २ ।।

मेरे माशूक श्री राजजी महाराज की बांहें मेरी रूह को बहुत प्यारी लगती हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है। हुकम ही इनकी हकीकत को जानता है।

अंग रंग सलूकी सुभानकी, चकलाई उज्जल गौर।
नाम सुनत इन अंग के, जीवरा न होत चूर चूर।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के रंग की सलूकी (शोभा), चकलाई (सुन्दरता) उज्ज्वल और गौर (गोरी) है। इन अंगों के नाम सुनकर यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

ए छबि अंग अर्स के, जोत अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।। ४ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि जो अमरद कही है, उसके अंग के तेज का वर्णन कैसे किया जाए?

Nijanand App